RESEARCH LINES

Owned, Printed & Published by
Dr. Tharsis Joseph, Principal
Deva Matha College
Kuravilangad, Kerala-686 633
An ISO 9001:2008 Certified Institution

Phone No: 04822-230233, 232951
Fax: 04822-232951
E-mail:devamatha1@sify.com
Website : www.dmck.in

Printed at
Archana Offset Printers, Kottayam

Periodicity 2 issue per year

® All rights are reserved

Scanned with OKEN Scanner

मालती जोशी की कहानी 'अवसान एक स्वप्न का' में अभिव्यक्त नारी जागरण

Dr. Santy Joseph

मालती जोशी का जन्म 4 जून 1934 को औरंगबाद, पूर्व हैदराबाद राज्य में महाराष्ट्रीयन परिवार में हुआ। प्रमुख कहानिसंग्रह है - 'मध्यान्तर', 'दादी की घडी', 'एक घर सपनों का', 'जीने की राह', 'विश्वास गाथा', 'पराजय', 'राग विराग', 'शोभा यात्रा' आदि। मालती जोशी ने अपनी अधिकतर रचनाओं में दांपत्य, पारिवारिक एवं सामाजिक जीवन को उभारा है। आधुनिक नारी की मनस्थिति, पारिवारिक जीवन में पति-पत्नी का संबन्ध आदि उनका रचा विषय है। उनकी राय में भारतीय नारी शोषितों में सबसे नीचे के स्थान पर है। कहने को वह पुरुष के बराबर है, पर यथार्थ में उसका कोई स्थान ही नहीं, हर स्थान पर उसका शोषण हो रहा है।

नारी समस्याओं का चित्रण मालती जोशी की समस्यायें, दहेज पीड़िता नारी की समस्यायें, विधवा की समस्यायें, अविवाहिता नारी की समस्यायें, उपेक्षिता एवं परित्यक्त नारी की समस्यायें, बाँझ की समस्या, निठल्लू पुरुष की पत्नी की समस्या, नारी के अकेलेपन की समस्या, कलंकिता नारी की समस्या आदि का जीवत चित्रण उसकी रचनाओं में देख सकती है। डॉ. सुभाष तलेकर के शब्दों में "कथा लेखिका ने बहूत सारी कहानियों में समकालीन मध्यवर्गीय नारी जीवन की विभिन्न समस्याओं को चित्रित करने का प्रयास किया है... श्रीमती जोशी की अधिकांश कहानियों पारिवारिक जीवन तथा नारी जीवन की समस्याओं से होते हुए भी लेखिका का ध्यान परिवारेतर विषयवस्तु की ओर भी गया है।"[१]

आधुनिक नारी अपने स्वतंत्र व्यक्तित्व को स्थापित करने के लिए प्रयासरत है। आर्थिक स्वावलंबन और मानसिक स्वतंत्रता के कारण वह अपने जीवन को अच्छा या बुरा बनाने के लिए स्वतन्त्र है। इस प्रकार अपनी अस्मिता के लिए प्रयासरत नारियां मालती जोशी की कई कहानियों में दीख पड़ती है। विवाहपूर्व प्रेम संबन्ध या विवाहपूर्व यौन-संबन्ध पुरुष के पारिवारिक जीवन को किसी भी तरह छू नहीं सकता है। कुछ स्वार्थ भारतीय पुरुष किसी न किसी कारण से पत्नी पसन्द न आने पर एक के बाद एक शादी रचता है या अवैध यौन संबन्ध-स्थापित करता है। पर सभी पुरुष पत्नी ऐसी चाहता है, जो दूध सी धुली और गंगाजल-सी पवित्र हो।

मालती जोशी द्वारा लिखित 'अवसान एक स्वप्न का' कहानी पुरुष के इस धिनौने और कुत्सित रूप को दिखाती है और इसके विरुद्ध आवाज़ उठनेवाली नारी को भी दर्शाती है। पिता रेवेन्यू में क्लास वन अफिसर थे, और माँ सुघड़ गृहिणी थी। उन्हें दो पुत्र और दो पुत्रियां हैं। पहला पुत्र इंजीनियर बन गए है - और दूसरा पुत्र गगन बंगलौर में दखिला दिलवाया है। बेटी एम.ए. कर रही है और नायिका आठवीं या नौवीं कक्षा में है। इतने में इंजिनियर भाई का विवाह "सोने का टुकड़ा" से हुआ। बहू प्रसव के लिए पीहर जाते समय टूर पर गए पिताजी मर गया। जिस लड़की को वह परिवार "सोने का टुकड़ा" सोचता है वह तो असल में 'आग का गोला' है। पिताजी की मृत्यु के बाद बड़ा बेटा समीर और उसकी पत्नी परिवार के बोझ ठोने के लिए तैयार नहीं है। बड़ा भाई गगन को बंगलौर वाला प्रोजक्ट छोड़ने को कहते हैं। तब बड़ी बेटी आरती परिवार

Assistant Professor, Dept. of Hindi, St. Aloysius College, Edathua, Alappuzha Dist.

Scanned with OKEN Scanner

की जिम्मेदारी स्वयं लेकर कहती है कि "भैया, छोटू की फिक्र मत करों। आज से उसका जिम्मा मैं ने लिया। पापा ने मेरी शादी के लिए कुछ रुपए रख छोड़े हैं। आज से वे मैं ने गगन के नाम पर दिए। रुपयों के अभाव में मेरी शादी न हो सकी, तो कोई बात नहीं, पर उसकी पढ़ाई नहीं रूकनी चाहिए, और भाभी, आज या कल मुझे नौकरी जरूर मिल जाएगी। तब मैं थरसक दादा का हाथ बँटा सकूँगी लेकिन मेहरबानी करके मेरी मां की गृहस्थी को मत कोसिए।"[२] बाद में आरती को नौकरी मिलती है। वेतन भी अच्छा है। और वह वेतन लाकर दादा के हाथ पर रख देती है। दूसरी बेटी भारती एम. काँम करते हुए बैंक की परीक्षाएँ दे डालती है और एक में सेलेक्शन भी मिलता है। तब वह माताजी से कहती है कि "माँ. अब आप दीदी की शादी की फिक्र कीजिए, आगे की नाव मैं खे लूँगी।"[३]

माताजी बेटी की शादी के लिए बड़ा बेटा समीर के हाथ पर सारे गहने निकालकर रख देती है तो भैया ये सब बेचकर शहर से दूर एक आलीशन बंगला बनाता है। उस बंगला को 'मातृछाया' नाम भी देता है। यह देखकर सब लोग दादा की मातृभक्ति की प्रशंसा करते है तो भारती जानबूझकर कहती है कि "चलो, इन लोगों ने इतनी ईमानदारी तो बरती है, मां की पूँजी से बने मकान को मां का नाम तो दिया।"[४]

गगन सात साल लगाकर बी.ई. पास करता है और उनकी शादी सहपाठी की इकलौती बहन के साथ हुई। दोनों दुबई में काम करते हैं। माँ की मृत्यु के बाद तेरहवीं में फिर वह आता है और दोनों बहनों को दुबई में जिन्दगी बिताने के लिए निमंत्रण भी करते है लेकिन बहनें पहचानती हैं कि निमंत्रण केवल शब्द है उस निमंत्रण में कोई ऊष्मा या आग्रह नहीं है। मां की वसीयत में मकान दोनों बेटियों के नाम पर लिखी है। इसलिए दोनों बहन साथ मिलकर वहां रहती हैं।

एक दिन बड़े भाई बहनों को देखने के लिए यहां आता है। उनकी बेटी स्वीटी के लिए ताबड़तोड़ लड़के ढूँढे जा रहे है। इस बार जो आई.ए.एस लड़के को उन्होंने तलाश किया है उसकी बहन आरती की कॉलेज में ही पढ़ाती है। परसों सुबह लड़की देखने का कार्यक्रम है इसलिए बहन को निमंत्रित करने के लिए भाई आता है। भारती मना करने पर भी आरती भाई के घर जाती है। लड़केवाले आरती को देखकर पसंद करते हैं और भाई से अपने एक तलाकशुदा भाई के लिए आरती का हाथ माँगते हैं। भाई-भाभी इस पर नाराज़ होकर बरसों बाद घर में आती है और आरती को कोसती है। तब भारती कहती है कि "भाभी, मैं आप से यही कहना चाहती थी, दीदी के पास अपनी ग्रेस है, गरिमा है, प्रतिभा है। दूसरों को इम्प्रेस करने के लिए वह किसी साज-क्षृंगार की मोहताज नहीं हैं। वैसे भी इस उम्र में रूप-सज्जा कोई मायने नहीं रखती। वह तो मेरी जिद थी, जो उन्होंने पूरी की। दोष अगर देना है, तो मुझे दीजिए।"[५] फिर भी वे लोग कोसना जारी रखते है। वह बहन की कन्यादान के लिए तैयार नहीं है और औरत क्षमा-याचना की मुद्रा में खड़ी है। ये सब देखकर भारती का खुन उबलता है और वह रोष पूर्वक गंभीर स्वर में कहती है कि "तुम चुप रही दीदी, हर बात पर क्षमा-याचना की मुद्रा में खड़े होने की ज़रूरत नहीं है" इस बार मैं ने दीदी को डपट दिया और फिर भाभी से मुखातिब हुई, "हाँ, तो किस दान की बात कर रही थी आप? दीदी कोई आलू-बैंगन हैं कि उन्होंने माँगा और आपने उठाकर दे दिया। वैसे भी आपको कन्यादान का एक कहाँ पहूँचता है। यह अधिकार तो उसका होता है, जो कन्या का पालन पोषण करता है। कम से कम आप लोग तो इसका दावा नहीं कर सकते।"[६]

दीदी कभी भी शादी के लिए तैयार नहीं है क्योंकि उसने मां को वचन दिया था कि सदा बारती के साथ रहेगी। भारती भी दीदी को प्यार करती है। इसलिए वह अगले दिन बैंक में न जाकर सीधे मिसेज प्रसाद के घर जाती है। पिता-जो रिटायर्ड डिस्ट्रिक्ट जज है - से मिलती है और बातें करती है। जज साहब के भाई सनातन लंदन में था और अब रिटायरमेंट लेकर

Scanned with OKEN Scanner

स्वदेश लौट आता है। वह तलाकशुदा है और दो बेटियाँ भी होती है। बातचीत करते समय भारती दीदी के संबन्ध में भाई द्वारा बनाये गये गलत धारणाओं को ठीक करने का श्रम करता है। बातचित खतम होने के बाद सनातन के कार पर भारती घर चलती है। बीच में, मनातन कहता है कि भारती को देखकर उसका तलाश पूर्ण हो जाता है क्योंकि वह ऐसी पत्नी चाहता है जिसका कोई इतिहास न हो। यह सुनकर भारती का पूरा शरीर क्रोध से जल उठा. उसे लगा कि अभी इसी वक्त उसे दंभी का गला दबा देना है ताविन वह ऐसी गंदी बात दुबारा न कह सके। वह अपना क्रोध प्रकट करके कहती है कि "डॉ. सनातन, मेरे बड़े भाई ने मेरी दीदी के कुँआरेपन को इतनी बड़ी गाली दी कि उसे सुनकर मेरा पूरा बजूद ही हिल गया था, पर आपकी बात सुनकर तो मैं एकदम, शख हो गई हूँ। आप खुद तलाकशुदा हैं, दो बच्चों के बाप हैं पर अपनी भावी पत्नी का तथाकथित अफेयर भी आपसे हजम नहीं हो रहा है। आश्चर्य है।"[७] विशुद्ध भारतीय संस्कारों की बात कहकर सनातन फिर भी अपनी बातों को मान्य बनाने का श्रम करता है। तब भारती कहती है कि "इसमें तो कोई शक ही नहीं है। आप में भारतीय पुरुष के संस्कार कूट-कूटकर भरे हुए हैं। भारतीय-पुरुष, जो खुद तो एक के बाद एक शादी रचाता जाता है, पर पत्नी ऐसी चाहता है, जो दूध की धुली और गंगाजल-सी पवित्र हो। थैंक यू डॉक्टर, आपन मुझे अपना असली चेहरा दिखा दिया। थैंक्स एंड गुडबाय।"[८] वह गाड़ी से उतरकर और आँखों में चदकर घर आती है। घर में दीदी को देखकर, उसके प्यार को देखकर ईश्वर को धन्यवाद देती है क्योंकि पुरुष के कुत्सित हाथों से वह और दीदी बाल-बाल बच गया हैं।

स्वार्थी पुरुषों के असली मुँह खोलकर दिखाने का श्रम प्रस्तुत कहानी द्वारा, कहानीकार करती हैं। पुरुष किसी प्रकार का स्वभाववाला क्यों न हो अपनी पत्नी क्लीन स्वभाववाली होना चाहता है। भारती, पुरुष के सब छल, कपटों के विरुद्ध आवाज़ उठाती है। अपनी अस्मिता को बनाए रखने केलिए वह प्रयत्न करती है।

संदर्भ एवं टिप्पणियां

१. मालती जोशी का कथा साहित्य : डॉ. सुभाष तलेकर पृ: ३४
२. औरत एक रात है: मालती जोशी, पृ: ४०
३. वही, पृ: ४१
४. वही, पृ: ४१-४२
५. वही, पृ: ४१
६. वही, पृ: ५८
७. वही, पृ: ६७
८. वही, पृ: ६७

Scanned with OKEN Scanner